Emerging Trends in Education [Vol. XII - No. 1 & 2. February & August 2025. pp 84-93]

सूचना समाज एवं मैनुअल कास्टेल्स

डॉ0 विवेक कुमार यादव*

सार संक्षेप

प्रस्तुत लेख मैनुअल कास्टेल्स द्वारा निर्मित 'सूचना समाज' से सम्बन्धित प्रमुख सिद्धान्तों में से एक पर आधारित है। कास्टेल्स वर्तमान सामाजिक परिदृश्य को सूचना युग' के रूप में परिभाषित करते हैं, जिसमें मानव समाज एक नये तकनीकी प्रतिमान में अपनी गतिविधियों का प्रदर्शन करता है। कास्टेल्स कहते हैं कि यह वर्तमान परिदृश्य 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की क्रांति द्वारा अस्तित्व में आया। मेरा मानना है कि सर्वप्रथम कास्टेल्स ने इस नई सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी को परिभाषित किया एवं इसकी तीन प्रमुख विशेषताओं नेटवर्क तर्क, कालातीत समय एवं प्रवाह का स्थान की व्याख्या की, जो केवल मीडिया और समाज के मध्य हो रही अन्तर्क्रिया में परिलक्षित होता है। इसलिए कास्टेल्स ने अपने सूचना समाज के सिद्धान्त को एक पद्धतिशास्त्र के रूप में प्रयोग किया है।

प्रस्तावना

मैनुअल कास्टेल्स एक स्पेनिश समाजशास्त्री हैं, जो प्रमुखतः सूचना समाज, संचार और वैश्वीकरण से सम्बद्ध विषयों पर शोध से जुड़े हैं। इनका जन्म स्पेन के कैटलन शहर में 9 फरवरी 1942 को हुआ था। जनवरी 2020 में, कास्टेल्स को स्पेन के सैंचेज के सरकार में विश्वविद्यालयों के मंत्री के रूप में नियुक्ति प्राप्त हुई। वह बार्सिलोना में यूनिवर्सिटेंट ओबेरट्टा ओ कैटाल्या (UOC) के समाजशास्त्र के पूर्व प्रोफेसर हैं। वर्तमान में विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और वालिस एनेनबर्ग चेयर प्रोफेसर ऑफ कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी एवं सोसाइटी ऑफ एनबर्ग स्कूल ऑफ कम्युनिकेशन, यूनिवर्सिटी ऑफ सैदर्न कैलिफोर्निया, लॉस एंजिल्स में हैं। वह समाजशास्त्र के प्रोफेसर एमेरिटस एवं कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले में शहरी एवं क्षेत्रीय योजना के प्रोफेसर एमेरिटस हैं, जहां उन्होंने 24 साल तक अध्यापन कार्य किया। कास्टेल्स सेंट जॉन्स कॉलेज, कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के एक अध्येता भी रहे हैं। साथ ही कास्टेल्स ने नेटवर्क सोसाइटी, कॉलेज ऑफ मोडियल स्टडीज, पेरिस की अध्यक्षता भी की।

सामाजिक विज्ञान उद्धरण सूचकांक के 2000 से 2014 के अनुसंधान सर्वेक्षण ने कास्टेल्स को दुनिया के सर्वश्रेष्ठ पांचवे पायदान के सामाजिक विज्ञान के विद्वान और अग्रेतर संचार विद्वान के रूप में नामित किया है। कास्टेल्स को 'नेटवर्क समाज' में शहरी और वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं की राजनीतिक गतिशीलता की अवधारणा को आकार देने के लिये 2012 के होलबर्ग पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। सन् 2013 में उन्हें समाजशास्त्र के लिये बलजान पुरस्कार से

* सहायक आचार्य, समाजशास्त्र विभाग, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया।

सम्मानित किया गया था।'

मैनुअल कास्टेल्स का जीवन परिचयः—

मैनुअल कास्टेल्स ने अपना प्रारम्भिक अध्ययन—अध्यापन एवं जीविकोपार्जन का कार्य 'ला मंच' से प्रारम्भ किया, लेकिन बाद में वह बार्सिलोना चले गए, जहां उन्होंने कानून और अर्थशास्त्र का अध्ययन किया।

एक रूढ़िवादी परिवार में जन्म लेने के कारण वे रूढ़िवादिता से अत्यन्त चिन्तित थे। कास्टेल्स कहते हैं कि ''मेरे माता—पिता बहुत अच्छे माता—पिता थे। मेरा परिवार एक दृढ़ रूढ़िवादी परिवार था लेकिन मैं कहूंगा कि मेरे माता—पिता के अलावा मेरे चरित्र को आकार देने वाली मुख्य बात यह थी कि मैं फासिस्ट स्पेन में पला—बढ़ा हूँ। युवा पीढ़ी के लोगों के लिये यह समझना मुश्किल है कि स्पेनिश युवा पीढ़ी इस स्थिति को किस आशय से देखती और समझती है। वास्तव में आपके पास अपने स्वयं के एवं अपने सम्पूर्ण वातावरण के विरोध करने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था, विशेषकर उस स्थिति में जब आप खुद पंद्रह या सोलह वर्ष के हो और आपको स्वयं का राजनीतिकरण करना पड़े।''

कास्टेल्स फ्रांस में चल रहे छात्र विरोधी 'फ्रेंको आन्दोलन' में राजनीतिक रूप से सक्रिय थे, परन्तु एक किशोर की राजनीतिक सक्रियता फ्रांस के सरकार को रास नहीं आई। वे कास्टेल्स को देशद्रोही के रूप में देखने लगे और उनके साथ देशद्रोहियों की तरह व्यवहार करना शुरू कर दिए। परिणामस्वरूप कास्टेल्स फ्रांस से स्पेन भागने को मजबूर हो गए। कास्टेल्स ने 20 वर्ष की आयु में अपनी स्नातक की पढ़ाई पेरिस में ही रहकर पूरी की। आगे की पढ़ाई के लिये उन्होंने पेरिस विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया जहाँ उन्होंने समाजशास्त्र विषय में डॉक्टर की उपाधि प्राप्त की। कास्टेल्स ने सन् 1964 में सोरबोन से स्नातक की उपाधि और 1967 में पेरिस विश्वविद्यालय से पी—एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। 24 वर्ष की आयु में कास्टेल्स लगभग 1967 से 1979 तक के बीच कई बार पेरिस विश्वविद्यालय में प्रशिक्षक बने। ये पहली बार पेरिस एक्स यूनिवर्सिटी नानट्रे (जहां कास्टेल्स ने डैनियल कोहन—बेंदित को पढ़ाया) में जब उन्हें प्रशिक्षक के रूप में नियुक्ति प्राप्त हुई तब उन्हें छात्र—विरोध का सामना करना पड़ा और अन्ततः उन्हें 1968 में निकाल दिया गया। इसके पश्चात् वे 1970 से 1979 तक "School of Higher Studies in Social Sciences" में प्रशिक्षक के रूप में पुनः नियुक्त हुए। 1979 में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले ने कास्टेल्स को समाजशास्त्र के प्रोफेसर एवं नगरीय एवं क्षेत्रीय नियोजन के प्रोफेसर के रूप में नियुक्त किया।

2003 में कास्टेल्स दक्षिण कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के एनबर्ग सम्प्रदाय के संचार विज्ञान के प्रोफेसर के रूप में जुड़े तथा संचार एवं प्रौद्योगिकी विभाग के प्रथम विभागाध्यक्ष बने। कास्टेल्स दक्षिण कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के 'पब्लिक डेप्लोमेसी' संस्था के संस्थापक सदस्य हैं, कूटनीति केन्द्र के संकाय सलाहकार परिषद के एक वरिष्ठ सदस्य हैं और एनबर्ग अनुसंधान नेटवर्क के अन्तरराष्ट्रीय संचार संस्थान के सदस्य भी हैं। कास्टेल्स का सम्पूर्ण जीवन स्पेन और

यूनाइटेड स्टेट में व्यतीत हुआ। 2008 से अब तक वह European Institute of Innovation and Technology के सलाहकार बोर्ड के सदस्य हैं। कास्टेल्स जनवरी 2020 से स्पेन में विश्वविद्यालयों के मंत्री के रूप में कार्य कर रहे हैं।

मैनुअल कास्टेल्स का अध्ययन क्षेत्रः–

मैनुअल कास्टेल्स के समाजशास्त्रीय अध्ययन का केन्द्र बिन्दु नगरीय समाजशास्त्र संगठन अध्ययन, इंटरनेट अध्ययन, सामाजिक आन्दोलन, संस्कृति का समाजशास्त्र और राजनीतिक अर्थव्यवस्था के संयोजन के साथ अनुभवजन्य अनुसंधान साहित्य को संश्लेषित करता है।

नेटवर्क समाज की उत्पत्ति के बारे में उनका मानना है कि उद्यम का नेटवर्क के रूप में परिवर्तन होने से इलेक्ट्रानिक इंटरनेट तकनीकों का जुड़ाव नेटवर्क संगठन के स्वरूपों से जुड़ा एक पूर्वानुमान होता है। इसके अतिरिक्त कास्टेल्स ने चतुर्थ विश्व (Fourth World) शब्द को गढ़ा जिसमें उप–जनसंख्या को सामाजिक रूप से वैश्विक दुनिया से पृथक रखा गया हैं। सामान्यतः इस विश्व का वर्णन समकालीन औद्योगिक समाज द्वारा निर्मित आदर्श से परे जीवन जीने के खानाबदोश, देहाती और शिकारी तरीके को दर्शाने के लिए किया गया है।

बीसवीं सदी के कई महा– आख्यानों में से एक है **'सूचना युग'**। मैनुअल कास्टेल्स ने अपनी तीन खण्डों में फैली हुई विस्तृत रचना The Rise of Network Society- The Power of Identity, End of Millennium में यही आख्यान पेश किया है। उनके विमर्श में सूचना युग एक ऐसे विचार की तरह उभरता है जो बीसवीं सदी और उसकी अतीत हो चुकी उपलब्धियों के बाद भी बचा रह गया है।

कास्टेल्स का कहना है कि सूचना युग ''मन की शक्ति को उजागर करता है, जो नाटकीय रूप से व्यक्तियों की उत्पादकता को बढ़ाएगा और अधिकाधिक अवकाश की ओर ले जाएगा, जिससे लोग **'वृहद अध्यात्मिक और तीव्र पर्यावरणीय चेतना'** प्राप्त कर सकेंगे।'' इस तरह का बदलाव सकारात्मक होगा। कास्टेल्स का तर्क है कि इससे संसाधन की खपत कम होगी। सूचना युग, उपभोग की बढ़ती प्रवृत्ति और नेटवर्क समाज यह तीनों वर्तमान जीवन में आधुनिक समाज का वर्णन करने और आधुनिक समाज के भविष्य को चित्रित करने का प्रयास कर रहे हैं। जैसा कि कास्टेल्स का सुझाव है, समकालीन समाज को 'मशीन के पुरातन रूप को नेटवर्क के साथ प्रतिस्थापित करने' के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

1970 के दशक में, एलेन तोरेन (कास्टेल्स के बौद्धिक जनक) के बौद्धिक पथ का अनुसरण करते हुए कास्टेल्स ने मार्क्सवादी दृष्टिकोण से नगरीय समाजशास्त्र की विविधता का अध्ययन किया, जो नगर के संघर्षपूर्ण परिवर्तन में सामाजिक आंदोलनों की भूमिका पर केन्द्रित है। इसी संदर्भ में कास्टेल्स ने **'सामूहिक उपभोग'** (सार्वजनिक परिवहन, सार्वजनिक आवास इत्यादि) की अवधारणा को प्रस्तुत किया, जिसमें राज्य के हस्तक्षेप के माध्यम से आर्थिक एवं राजनीतिक स्तर के संघर्षों तक विस्थापित होने वाले सामाजिक संघर्षों की एक विस्तृत श्रृंखला थी। 1980 के

दशक के प्रारम्भ में मार्क्सवादी संरचनाओं को पार करते हुए उन्होंने अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन में नई तकनीकों की भूमिका पर अपना ध्यान केन्द्रित किया। 1989 में कास्टेल्स ने अर्थव्यवस्था के संदर्भ में समय और दूरी के समन्वय के लिये उपयोग की जाने वाली वैश्विक सूचना नेटवर्क के अभौतिक तत्वों एवं उपकरणों के लिये **'प्रवाह के स्थान'** (Space of Flows) की अवधारणा को प्रस्तुत किया। 1990 के दशक में कास्टेल्स ने The Information age : Economy Society and Culture' में जटिल शोध को एक त्रयी के रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें "The Rise of the Network Society" (1996). "The Power of Identity" (1997) "End of Millennium" (1998) सम्मिलित है। दो वर्ष बाद, दुनिया भर के विश्वविद्यालयों की संगोष्ठियों में इस त्रयी को अत्यधिक लोकप्रियता एवं स्वीकृति प्राप्त हुई, जिससे प्रेरित होकर इसके दूसरे संस्करण (2002) को कास्टेल्स ने प्रकाशित किया जो पहले संस्करण (1996) से 40 प्रतिशत भिन्न है।

The Information Age Economy, Society and Culture तीन समाजशास्त्रीय आयामों का निर्माण करती है– उत्पादन, शक्ति और अनुभव। इस संदर्भ में यह तथ्य महत्वपूर्ण है कि अर्थव्यवस्था का संगठन, राज्य और उससे सम्बन्धित संस्थाओं एवं जिस तरह से दैनिक जीवन को अर्थ प्रदान करता है वे सामाजिक गतिशीलता के अप्रासंगिक स्रोत हैं। इसे असत्त और अन्तर्सम्बन्धित संस्थाओं के रूप में समझा जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, कास्टेल्स राज्य की भूमिकाओं पर बल देते हुए इंटरनेट के विकास के विश्लेषण के साथ एक स्थापित साइबरनेटिक संस्कृति के सिद्धान्तकार बने, जिसमें राज्य सामाजिक आंदोलनों और व्यापार की भूमिकाओं को उनके हितों के अनुसार आर्थिक बुनियादी ढांचे को आकार देने पर जोर दिया गया है। उनका कहना है कि हमारा **'समाज सामाजिक सम्बन्धों के जाल'** (Net) एवं **'स्व'** (Self) के द्विध्रुवी विरोध के समक्ष तेजी से संरचित है। जहाँ **'नेट'** सामाजिक संगठनों के प्रमुख रूप में क्षैतिज एकीकृत पदानुक्रमों के स्थान पर नेटवर्क संगठनों को दर्शाता है, वहीं 'स्व' एक सामाजिक स्वरूप के परिवर्तित सांस्कृतिक परिदृश्य में सामाजिक पहचान और अर्थ का उपयोग करने वाले प्रथाओं का निरूपण करता है।

कास्टेल्स वर्तमान सामाजिक परिदृश्य को सूचना युग के रूप में परिभाषित करते हैं, जिसमें मानव समाज एक नए तकनीकी प्रतिमान में अपनी गतिविधियों का प्रदर्शन करता है। कास्टेल्स तर्क देते हैं कि इस परिदृश्य को सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी की क्रांति के द्वारा 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लाया गया था। कास्टेल्स एक ऐसे महत्वपूर्ण सिद्धान्तकार हैं, जिन्होंने नयी सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी को विश्लेषित किया और इसके तीन मुख्य विशेषताओं–**नेटवर्क तर्क, कालातीत काल** एवं **प्रवाह के स्थान** को प्रस्तुत किया है, जो केवल मीडिया और समाज की अन्तःक्रिया में दिखलाई देता है। इसलिए कास्टेल्स सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी को अपने सूचना समाज के सिद्धान्त के अन्तर्गत एक पद्धति के रूप में प्रयोग करते हैं।

कास्टेल्स के अनुसार– सूचना समाज में बाजार वास्तविक समय के आधार पर संचालित होता है। पूँजी विभिन्न अर्थतंत्रों के बीच घंटो, मिनटों और सेकेंडों में तेजी से आती–जाती है। बड़े

पैमाने पर होने वाले उत्पादन का समय क्रम और जीवन चक्र, उसकी जैविक और सामाजिक लय महत्वहीन हो जाती है। वृद्धावस्था और मृत्यु भी अपनी अनुष्ठानिकता खो देती है। वृद्ध लोगों की गिनती का तरीका बदल जाता है। उन्हें जल्दी रिटायर हो जाने वालों, वक्त पर रिटायर होने वालों, अवकाश ग्रहण के बाद भी काम कर सकने वाले बुजुर्गों में बाँट कर देखा जाने लगता है। अधिक आयु वाली इन श्रेणियों का जोड़–तोड़ करके तरह–तरह के समुच्चय बनाये जाते हैं। मीडिया को आकर्षित करने वाली घटनाएँ भी अपनी आंतरिक क्रमबद्धता खो कर एक जैसी सांसारिकता के दायरे में देखी जाने लगती है। कास्टेल्स निष्कर्ष निकालते हैं कि क्रम या सिलसिले के खत्म होते ही ऐसे समय की रचना होती है जो समरूप होता है, यानि जिसमें अलग–अलग परतें नहीं होती, यानि जो शाश्वत होता है।

मार्शल मैक्लुहान ने कास्टेल्स के सूचना समाज की अवधारणा पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि कास्टेल्स का सूचना समाज पश्चिमी विज्ञान तंत्र के सबसे पुराने मिथकों में से एक है एवं कभी न रुकने वाली मशीन का शिकार नजर आता है। आधुनिक विज्ञान के आधार में न जाने कब से एक ऐसी मशीन की खोज निहित है, जिसमें कोई घर्षण नहीं होगा और जो किसी भी तरह के पैमाने के मातहत नहीं होगी। वस्तुतः आधुनिक विज्ञान दो तरह के रूप को अपनाता है : **ऊर्जा आधारित** और **सूचना आधारित**। कास्टेल्स ऊर्जा–विज्ञान की उपेक्षा करते हैं और इसी कारण उनका सूचना समाज साहित्यालोचक **फ्रेंक कारमोड** के शब्दों में **'समाप्ति के बोध'** से कतराता हुआ अपने युगांत की समझ से वंचित हो जाता है।

काल– चिंतन की दृष्टि से औद्योगिक समाज और सूचना समाज का फर्क समझ लेना भी जरूरी हैं। औद्योगिक समाज **टेलर** द्वारा प्रवर्तित काल की यांत्रिक धारणा और **रोथलिस बर्गर** द्वारा प्रवर्तित काल की मानवीय सम्बन्धों पर आधारित धारणा (समुदायों, अनौपचारिकता, रोजमर्रा के प्रतिरोध का काल) के बीच सक्रिय रहा है। इसके विपरीत कास्टेल्स पारिस्थितिकीय समय (सुदीर्घ और विकासमान) के बीच कार्यरत हैं। कास्टेल्स परिस्थितिकीय समय की धारणा समाजशास्त्री लैश और उरो से उधार लेते हैं। कास्टेल्स को लगता है कि आज का समय पारिस्थितिकीय आंदोलनों का है। उनके अनुसार पारिस्थितिकीय चिंतन का तात्पर्य है मनुष्य और प्रकृति के बीच सम्बन्धों को दीर्घकालीन नजरिये से देखना। यह दृष्टि एक नयी जैविक अस्मिता गढ़ने में मदद कर सकती है, जिसके तहत कोई प्रजाति अपनी अस्मिता और एकता में मिलकर ही समग्र बन सकती है। साथ ही कास्टेल्स की दृष्टि में यह भी साफ हैं कि पारिस्थितिकीय समय कोई रहस्यमय अथवा प्रौद्योगिकी विरोधी अवधारणा नहीं है। वे इस समय को **'विज्ञान आधारित आन्दोलन'** के माध्यम से पारिस्थितिकीय संतुलन की खोज के रूप में देखते हैं। उनका कहना है कि पर्यावरण आंदोलन की कामयाबी इस बात पर काफी कुछ निर्भर है कि वह संचार की नयी प्रविधियों पर कितनी कुशलता से महारत हासिल करता है। कास्टेल्स की यह थीसिस उस समय काफी मजबूत लगने लगती है, जब **ग्रीनपीस फूड फर्स्ट फ्रेंड्स ऑव अर्थ, द रेन फॉरेस्ट एक्शन नेटवर्क** जैसे पर्यावरण के लिये संघर्षरत संगठनों के इलेक्ट्रानिक संचार कौशल का पहलू सामने आता है। मुश्किल यह है कि कास्टेल्स की यह

समझ बेहतरीन होने के बाद भी अंततः पश्चिम केन्द्रीय ही साबित होती हैं। वे उस दुनिया की बातें करते हैं, जिसमें सबके पास टीवी है। वे पर्यावरण आंदोलन को विज्ञान सम्मत मानते हैं। उनके ख्याल से यह आंदोलन प्रकृति को मानव जीवन के लिये उपयोगी मशीन के रूप में फिर से स्थापित करने की कोशिश है, पर वे यह भूल जाते हैं कि पर्यावरण आंदोलन का असली मुद्दा प्रकृति के साथ तारतम्यता न होकर अपना वजूद बनाए रखने के लिये संघर्ष का है।

कास्टेल्स की सैद्धान्तिक परिकल्पना–

कास्टेल्स ने अपनी सैद्धान्तिक परिकल्पना **'नेट'** और **'सेल्फ'** (स्व) के मध्य हो रहे द्वन्द्वात्मक विरोध के रूप में प्रस्तुत की है, जो दो सैद्धान्तिक मान्यताओं के वास्तविक और शक्तिशाली संयोजन पर आधारित है। वास्तव में कास्टेल्स का मुख्य तर्क यह है कि इस सदी के अंत में पूँजीवाद का एक नया रूप उभरा है, जो अपने चरित्र में वैश्विक, अपने लक्ष्यों में कठोर एवं अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में बहुत अधिक लचीला हैं। इस पूँजीवादी व्यवस्था को सांस्कृतिक विशिष्ठता, दैनिक जीवन और पर्यावरण पर नियंत्रण के लिये सामाजिक आंदोलनों के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व जगत में चुनौती दी जा रही है। यह तनाव सूचना युग को केन्द्रीय गति प्रदान करता है, क्योंकि हमारा समाज नेट और स्व के द्विध्रुवी विरोध के समक्ष तेजी से संरचित हो रहा है, यहाँ नेट का तात्पर्य नेटवर्क संचार मीडिया के व्यापक उपयोग के आधार पर निर्मित नए संगठनात्मक संरचनाओं से है। नेटवर्क पैटर्न उच्च आधुनिकी आर्थिक क्षेत्रों, उच्च प्रतिर्स्पधी निगमों के साथ–साथ सामुदायिक और सामाजिक आंदोलनों की प्रमुख विशेषता है। वहीं स्व उन गतिविधियों का प्रतीक है जिनके माध्यम से समाज के सदस्य संरचनात्मक परिवर्तन और अस्थिरता की स्थितियों के तहत अपनी पहचान को पुनः पुष्टि करने का प्रयास करते हैं, जो सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों के संगठन के साथ गतिशील नेटवर्क में चलायमान है।

नेट और स्व की प्रस्थापना की विवेचना के पश्चात् कास्टेल्स ने फ्रांसीसी समाजशास्त्री **ऐलन तुरैन** जो कि सामाजिक आंदोलनों के अध्ययन से निकटता से जुड़े थे, से प्रभावित होकर तीन प्रकार के पहचानों (Identification) की व्याख्या प्रस्तुत की है, जो विभिन्न सामाजिक संगठनों से सम्बन्धित है–

1– वैधानिक पहचान (Legitimizing Identity)

इस प्रकार के पहचान की प्रमुख विशेषता सामाजिक कर्ताओं पर समाज के प्रमुख संगठनों द्वारा अपने वर्चस्व तथा तर्कसंगतता को स्थापित करना है। वस्तुतः वैधानिक पहचान से सभ्य समाज और उनसे सम्बन्धित संस्थाएं निर्मित होती है जिसे मैक्स वेबर ने कहा है।

2– प्रतिरोध पहचान (Resistance Identity)

यह पहचान उन कर्ताओं द्वारा निर्मित है जो समाज द्वारा निर्मित वर्चस्व के तर्क द्वारा बाहर किए जाने की स्थिति में है। प्रतिरोध पहचान उत्पीड़न अथवा असहनीय स्थितियों का सामना करने के तरीके के रूप में समाज अथवा समुदाय के गठन की ओर ले जाती है।

3– परियोजना पहचान (Project Identity)

सक्रिय आंदोलन, जिसका उद्देश्य विद्यमान सामाजिक व्यवस्था को परिवर्तित करना है। मात्र अभिजात वर्ग के विरोध में अपने को पहचान देने के लिये अस्तित्ववान है। नारीवाद और पर्यावरणवाद इसी श्रेणी के पहचान के अन्तर्गत सम्मिलित हैं ।

उपर्युक्त बिन्दु यह बतलाते हैं कि कास्टेल्स की विशेष उपलब्धि दो सैद्धान्तिक दृष्टिकोणों (नेट व स्व) को मिश्रित करना है, जो परस्पर आश्रित और वास्तविक है। वास्तव में कास्टेल्स का सिद्धान्त अन्य पूर्ववर्ती सिद्धान्तों से पृथक एवं मौलिक है। सूचना युग किसी सिद्धान्त का वर्णन नहीं करता अपितु यह अभ्यास का विश्लेषण करके संचार सिद्धान्त की व्याख्या करता है। अध्ययन की यह पद्धति कास्टेल्स को सुसंगत रूप से एक प्रभावशाली अध्ययन क्षेत्र को समाहित करने में सक्षम बनाती है। उदाहरणस्वरूप – सिलिकॉन वैली की उच्च तकनीक प्रयोगशालाओं से कोलम्बियाई जंगल की निम्न तकनीक प्रयोगशालाओं तक, वैश्विक पूँजीवादी बाजारों से टोक्यो मैट्रो प्रणाली पर हुए आतंकवादी हमले तक एवं उससे भी आगे तक। कास्टेल्स का यह द्वय दृष्टिकोण उसके विश्लेषण को अत्यधिक मजबूती प्रदान करता है। वहीं पहचान की व्याख्या के अन्तर्गत कास्टेल्स ने सामाजिक कर्ताओं पर समाज के वर्चस्व एवं तर्क संगतता, समाज द्वारा निर्मित वर्चस्व का तर्क द्वारा प्रतिरोध एवं सक्रिय आंदोलन के माध्यम से व्यवस्था को परिवर्तित करने पर बल दिया है।

कास्टेल्स ने **'सूचना युग'** (The Information age) में सामाजिक विकास के नए चरण के आने की घोषणा की है। वह इसे सूचना युग या सूचनावाद कहता है और यह मानता है कि इस युग का पदार्पण पिछले दो चरणों के बाद आता है। वह दो चरण है–**पूर्व उद्योगवाद** और **उद्योगवाद।** सूचनात्मकता अनिवार्य रूप से पिछले औद्योगिक चरण से भिन्न है। विकास के प्रत्येक प्रणाली (Mode) में एक संरचनात्मक रूप से निर्धारित प्रदर्शन सिद्धान्त होता है जिसके चारों ओर तकनीकी प्रक्रियाओं का आयोजन होता है। उद्योगवाद आर्थिक विकास की ओर उन्मुख होता है, जो अधिकतम उत्पादन की नींव पर खड़ा है। सूचनावाद तकनीकों विकास की ओर उन्मुख है, वही तार्किक विकास ज्ञान के संचय एवं सूचना प्रसंस्करण में जटिलता के उच्च स्तर की ओर बढ़ रहा है।

हालांकि कास्टेल्स का मानना है कि सूचना प्रसंस्करण और उसके उत्पादन दोनों पर ध्यान केन्द्रित न करके उत्पादन पर ध्यान केन्द्रित करने से उत्पादन और भी अधिक बढ़ जाता है। जबकि ज्ञान का उच्च स्तर सामान्य रूप से इनपुट के प्रति इकाई के उत्पादन स्तर से अधिक हो सकता है, जो कि सूचनावाद के अन्तर्गत तकनीकी उत्पादन कार्य की विशेषता को दर्शाता है। इसलिए कास्टेल्स के अनुसार, मानव अथवा सामाजिक विकास एक दिशा में गतिमान होता है और यह दिशा प्रभावशीलता की ओर अग्रसर है। प्रत्येक अग्रमुखी चरण प्रदर्शन की प्रभावशीलता में अपने पूर्ववर्ती चरण को अपने में समाहित कर लेता है। प्रभावशीलता के इस उदय को कैसे प्राप्त किया जाता है? कास्टेल्स का तर्क है कि सूचना युग एक ऐतिहासिक काल है, जिसमें

मानव समाज अपने चारों ओर गठित माइक्रो इलेक्ट्रानिक आधारित सूचना/संचार प्रौद्योगिकी एवं आनुवंशिक अभियांत्रिकी तकनीकी प्रतिमान में अपनी सामाजिक क्रियाओं का निर्वहन करते हैं। इसका तात्पर्य यह है कि सूचना प्रौद्योगिकी से आनुवांशिक अभियांत्रिकी प्रौद्योगिकी तक की सभी वर्तमान प्रौद्योगिकियां अपने मूल में सूचना की प्रक्रिया है। यह बिन्दु कास्टेल्स को इस निष्कर्ष पर ले जाता है कि, सूचना के संदर्भ में समकालीन समाज और उसके पूर्ववर्ती समाजों के बीच अंतर केवल मात्रात्मक नहीं अपितु गुणात्मक है। इस स्थिति की व्याख्या करने के लिये कास्टेल्स ने सूचना समाज एवं सूचनात्मक समाज के मध्य अंतर को निम्नवत् प्रस्तुत किया है–

'सूचना समाज' समाज में सूचना की भूमिका पर जोर देता है, परन्तु मेरा तर्क यह है कि सूचना अपने व्यापक अर्थ में, ज्ञान के संचार के रूप में सभी समाजों में महत्वपूर्ण रही है। उदाहरणार्थ, मध्यकालीन यूरोप, जो सांस्कृतिक रूप से संरचित एवं कुछ हद तक एकीकृत व साथ ही एक बौद्धिक ढांचे के रूप में विद्यमान था।

इसके विपरीत **'सूचनात्मक समाज'** सामाजिक संगठन के एक विशिष्ठ स्वरूप की विशेषता को इंगित करता है, जिसमें सूचना उत्पादन, प्रसंस्करण, एवं प्रसारण इस ऐतिहासिक अवधि में उभरती हुई नई तकनीकी स्थितियों के कारण उत्पादकता और शक्ति के मूलभूत स्रोत बन जाते हैं।

इस प्रकार, समकालीन समाज को यथोचित सूचनात्मकता कहा जा सकता है, क्योंकि सूचना उत्पादकता का मुख्य स्रोत उत्पादन एवं उत्पादन के मुख्य साधन हैं। हालांकि, अपनी सभी महत्वपूर्ण कृतियों में कास्टेल्स ने **'सूचनात्मक'** शब्द का प्रयोग **'सामाजिक विश्व'** के कुछ स्थानों के लिये किया है, जबकि सम्पूर्ण समाज के लिये वह अधिकतर 'नेटवर्क समाज' शब्द का उपयोग करते हैं। कास्टेल्स कहते हैं कि नेटवर्क तर्क (Network Logic) समाज के नए स्वरूप की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता है, परन्तु यह तर्क कहाँ से आता है? इस प्रश्न का उत्तर 'प्रौद्योगिकी' में निहित है, क्योंकि यह पूरी तरह से सूचना प्रसंस्करण प्रौद्योगिकियां हैं जो इलेक्ट्रानिक आधारित सूचना नेटवर्कों के सामाजिक संगठन और सामाजिक अन्तर्क्रिया के नये स्वरूपों के गठन की अनुमति देती हैं। इस प्रकार समाज की पूरी संरचना, कास्टेल्स के अनुसार, प्रौद्योगिकियों पर केन्द्रित है, या यहां तक कि प्रौद्योगिकी ही समाज हैं और प्रौद्योगिकी को समझे बिना समाज को नहीं समझा जा सकता है। परन्तु प्रौद्योगिकी हमें समाज को समझने में कैसे मदद करती है? इस प्रश्न का उत्तर पहले ही दिया जा चुका है कि समकालीन समाज सामाजिक विकास की प्रक्रिया का एक उत्पाद है। यह प्रदर्शन की प्रभावशीलता में अपने पूर्ववर्ती चरणों से भिन्न है। यह प्रभावशीलता प्रमुख तकनीकी प्रतिमान **'पदार्थ प्रसंस्करण से सूचना प्रसंस्करण'** में परिवर्तन के कारण प्राप्त होती है। इसके अलावा, नई प्रौद्योगिकियाँ न केवल समाज की क्षमता को बढ़ाती हैं बल्कि अपने स्वयं के प्रदर्शन के सिद्धान्त के अनुसार इसकी संरचना को आकार भी प्रदान करती हैं। इसका तात्पर्य यह है कि क्या कास्टेल्स प्रौद्योगिकी को सामाजिक विकास की प्रेरक शक्ति मानते हैं? इससे कास्टेल्स पर तकनीकी नियतिवादी होने का

आरोप लगाया जाता है, परन्तु कास्टेल्स अपने ऊपर तकनीकी नियतिवादी होने के आरोप को सिरे से खारिज करते हैं। फिर भी उनके सिद्धान्त में प्रौद्योगिकी और समाज का विलय कुछ महत्वपूर्ण सवाल उजागर करता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त तथ्यगत विश्लेषण से स्पष्ट है कि कास्टेल्स के सूचना युग का सिद्धान्त समकालीन समाज पर सूचना संचार तकनीक के प्रभाव से निर्मित आज का प्रभावपरक सिद्धान्त है। कास्टेल्स इस बात पर जोर देते हैं कि उनका यह सिद्धान्त वास्तव में समकालीन मीडिया के सिद्धान्त क्षेत्र को एक सामाजिक दायरे में लाने का अथक प्रयास है। कास्टेल्स के मन मस्तिष्क में **'सामाजिक विश्व'** का यह चित्र प्रौद्योगिकी द्वारा उत्पन्न समस्याओं पर कुछ नवीन दृष्टि निर्मित करता है। कास्टेल्स इस बिन्दु पर लगातार जोर देते हैं कि नई तकनीकी प्रतिमान सामाजिक परिवर्तन के प्राथमिक आयाम हैं। कुछ आलोचक कास्टेल्स पर तकनीकी नियतिवादी होने का आरोप भी लगाते हैं। स्वयं कास्टेल्स ने इन आरोपों को नकारा और यह घोषणा की कि तकनीकी ही समाज है और तकनीकी उपकरणों को समझे बिना समाज को नहीं समझा जा सकता है। तकनीकी समाज का निर्धारण नहीं करती, बल्कि समाज पर इसे लागू करती है। हालांकि कास्टेल्स की सूचना समाज की प्रमुख विशेषताओं के विश्लेषण से यह पता चलता है कि यह विरोधात्मक या विरोधाभास है। अर्थात् कास्टेल्स प्रौद्योगिकी को समाज का प्रतीक मानते हैं और समाज प्रौद्योगिकी आधारित उनके मीडिया सिद्धान्त का प्रतीक है।

कास्टेल्स ने सभी प्रकार के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन के महत्व पर अधिक जोर नहीं दिया है, क्योंकि इन परिवर्तनों ने समकालीन वैश्विक पूंजीवादी, सामाजिक–आर्थिक स्थिति को विकसित होने में बाधा पहुंचाई हैं। कास्टेल्स के लिये 'स्थान और समय' महत्वपूर्ण है, हालांकि लचीली सूचनात्मक नेटवर्क व्यवस्था में ठोस पदानुक्रमित औद्योगिक सामाजिक संरचना के परिवर्तन को स्पष्ट करने के लिये मात्र अनुपात–लौकिक रूपांतरण पर्याप्त नहीं लगते हैं।

इस प्रकार कास्टेल्स ने अपने सिद्धान्त में समय और स्थान के साथ तीसरे आवश्यक तत्व के रूप में नेटवर्क तर्क को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। इसे सबसे महत्वपूर्ण तत्व भी माना जा सकता है, क्योंकि कास्टेल्स का कहना है कि यह एक पूर्ववर्ती तत्व है, एक नई सामाजिक संरचना का उद्‌भव हमारे जीवन की भौतिक नींव, समय और स्थान के पुनर्परिवर्तन से जुड़ा हुआ है। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या कास्टेल्स सामाजिक जगत में इन तीन तत्वों की खोज करते हैं? क्या कास्टेल्स अपने वादे के मुताबिक नेटवर्क समाज का सिद्धान्त प्रस्तुत कर पाए हैं? इस प्रश्न का जबाव आलोचकों ने निश्चित रूप से नहीं के रूप में दिया है। कास्टेल्स अपने सिद्धान्त में पूरे समाज को इंटरनेट की छवि और समानता के रूप में देखते है। उनका कहना है कि **''सभी प्रक्रियाएँ संगठनात्मक रूप से नेटवर्कों द्वारा निर्मित होती हैं।''** अन्य शब्दों में, सभी समकालीन प्रवाह आर्थिक, वित्तीय, वैयक्तिक आदि की पहचान एवं निर्माण सूचना के प्रवाह के प्रतिमानों द्वारा की जाती है और यदि सूचना का प्रसारण अधिकतर नए सूचना एवं संचार

तकनीकी के चैनलों में प्रसारित होता है, तो प्रसारित होने वाले संदेश मीडिया के स्वरूप और विशेषताओं को प्राप्त हैं, वे हैं– नेटवर्क तर्क, समयहीन समय और प्रवाह का स्थान। मूल में इसलिये कास्टेल्स के सूचना समाज के सिद्धान्त में मीडिया सिद्धान्त अन्तर्निहित है, जो तीन बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट होता है–

1– यह मीडिया सिद्धान्त मार्शल मैक्लुहान के सैद्धान्तिकरण का अनुसरण करता है, जहाँ मीडिया को संचार के उपकरण के रूप में न मानकर ऐसी तकनीक के रूप में जाना जाता है, जो मानव सम्बन्धों के प्रतिमान को परिवर्तित करते हैं।

2– नेटवर्क तर्क की अवधारणा पश्चिमी सभ्यता के विकेन्द्रीकरण की चुनौती के मैकलुहानियन विचार पर आधारित है। मैक्लुहान के अनुसार उनकी चुनौती का उचित उत्तर सामाजिक विश्व की केन्द्र परिधि की संरचना का विकेन्द्रीकरण है और कास्टेल्स यह सुझाव भी देते हैं कि समकालीन नेटवर्क आईसीटी समाज की नेटवर्किंग की मांग करता है।

3– नेटवर्क तर्क के अतिरिक्त नए मीडिया की दो अन्य महत्वपूर्ण विशेषताएं **'कालातीत समय'** और **'प्रवाह का स्थान'** है जो मैकलुहान के **'अनुगमन के सिद्धान्त'** का अनुसरण करता है। साथ ही समय और स्थान के परिवर्तन के कारण इलेक्ट्रानिक माध्यम द्वारा लेखन को एक प्रमुख माध्यम के रूप में प्रतिस्थापित करता है। निश्चित रूप से कास्टेल्स ने आने वाली नयी सूचना की पहचान करने के लिये तकनीकी क्रांति की अवधारणा को प्रस्तुत किया है, जो न केवल सामाजिक परिवर्तन का कारण बनी वरन् उसने यह बताया कि सामाजिक परिवर्तन के माध्यम से क्या हो सकता है एवं क्या होगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- Castelles, Manuel (1997), "The Power of Identify", Vol-II Wiley Blackwell Publishing, United States, 10-12
- Castells, Manuel (1999). "The Information age Economy Society and culture", Vol. I, II & III, Wiley Blackwell Publishing, United States, 22 & 23.
- Castelles, Manuel (2010). "The Information age Economy, Society and Culturre," Vol-I: The Rise of Network Society, Second Edition with a new Preface, Malden, MA & Oxford wiley, Blackwell Publishing, United States, 36-43
- Harry, Kreisler (2001) "Manuel Castells", University of California Press, Califomia, 18.
- Howard PhilipN.(2011)), "CastellsandMedia, "Politypress, Cambridge, UKS Malden, P.3
- Opcit,PP.6t08
- Stalder, Felix (2006). "Manuel Castells", Polity Press, Cambridge, UK & Malden, 18
- Strange love, Michael (2005), "The Empire of Mind: Digital Piracy and the anti-capitalist movement", University of Taronto Press, Toronto.